हिन्दी विभाग

दिनांक 16/04/2020

स्नातकोत्तर तृतीय सत्रार्द्ध

पत्र संख्या :- 10

प्रश्न:— कामायनी की कथानक पर विचार करे।

कामायनी हिन्दी भाषा का एक महाकाव्य है इसके रचयिता जयशंकर प्रसाद हैं। यह आधुनिक छायावादी युग का सर्वोत्तम और प्रतिनिधि हिन्दी महाकाव्य है प्रसाद जी की यह काव्य रचना 1936 ई० में प्रकाशित हुई परंतु इसका प्रणयन प्रायः 7-8 पूर्व ही प्रारंभ हो गया था। 'चिंता' से प्रारंभ कर 'आनंद' तक 15 सर्गों के इस महाकाव्य में मानव मन के विविध अंतर्वृत्तियों का क्रमिक उन्मीलन इस कौशल से किया गया है कि मानव सृष्टि के आदि से अब तक के जीवन के मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक विकास का इतिहास भी स्पष्ट हो जाता है।

कला की दृष्टि से कामायनी छायावादी काव्यकला का सर्वोत्तम प्रतीक माना जा सकता है चित्तवृत्तियों का कथानक के पात्र के रूप में अवतरण इस काव्य की अन्यतम विशेषता है और इस दृष्टि से लज्जा, सौन्दर्य, श्रद्धा और इड़ा का मानक रूप में अवतरण हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है। कामायनी प्रत्यभिज्ञा दर्शन पर आधारित है साथ ही इस पर अरविन्द दर्शन और गाँधी दर्शन का प्रभाव भी यत्र-तत्र मिल जाता है।

प्रसाद ने इस काव्य के प्रधान पात्र मनु और कामपुत्री कामायनी 'श्रद्धा' को ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में माना है साथ ही जलप्लावन की घटना को भी एक ऐतिहासिक तथ्य स्वीकार किया है। शतपथ ब्राह्मण के प्रथम कांड के आठवें अध्याय से जलप्लावन संबंधी उल्लेखों का संकलन कर प्रसाद ने इस काव्य का कथानक निर्मित किया है साथ ही उपनिषद् और पुराणों में 'मनु' और 'श्रद्धा' का जो रूप दिया गया है उन्होंने उसे अस्वीकार नहीं वरन कथानक को ऐसा स्वरूप प्रदान किया जिसमें मनु, श्रद्धा और इड़ा के रूप की भी संगति भली भाँति बैठ जाए। परन्तु सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर ज्ञात पड़ता है कि इन चरित्रों के रूपक का निर्वाह ही अधिक सुन्दर और सुसंगत रूप में हुआ, ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में वे पूर्णतः एकांगी और व्यक्तित्वहीन हो गए हैं।

मनु के मन में समान ही अस्थिरता है। पहले श्रद्धा की प्रेरणा से वे तपस्वी जीवन त्याग कर प्रेम और प्रणय का मार्ग ग्रहण करते हैं, फिर असुर पुरोहित आकुलि और किलात के बहकावे में आकर हिंसावृत्ति और स्वेच्छाचरण के वशीभूत हो श्रद्धा के सुख-साधन-निवास छोड़। ऐसा समीर की भाँति भटकते हुए सारस्वत प्रदेश में पहुँचते हैं। 'श्रद्धा' के प्रति 'मनु' के दुर्व्यवहार से क्षुब्ध काम का अभिशाप सुन हताश हो

इड़ा के संसर्ग से बुद्धि की शरण में जा भौतिक विकास का मार्ग अपनाते हैं वहाँ भी संयम के अभाव के कारण इड़ा पर अत्याचार कर बैठते हैं और प्रजा से इनका संघर्ष होता है। इस संघर्ष में पराजित और प्रकृति के रुद्र प्रकोप से विक्षुब्ध मनु जीवन से विरक्त हो पलायन कर जाते हैं। और अन्त में श्रद्धा के पथप्रदर्शन में उसका अनुसरण करते हुए आध्यात्मिक आनंद प्राप्त करते हैं। इस प्रकार श्रद्धा - आस्तिक भाव तथा इड़ा बौद्धिक क्षमता का मनु के मन पर जो प्रभाव पड़ता है उसका सुन्दर विश्लेषण इस काव्य में मिलता है।

प्रस्तुतकर्ता
बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण कॉलेज हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो० - 8292271041
ईमेल - benamkumar13@gmail.com

दिनांक
16/04/2020